ISBN: 978-81-974990-9-8

14. कोविड–19 का शिक्षा पर प्रभाव और नवीन आयाम

डॉ. सूर्य देव यादव

सहायक प्रध्यापक,
एरिसेन्ट बी.एड कॉलेज पटेलपाली रायगढ़ (छ.ग).

परिचय –

विश्व के लिए कोविड–19 आपदा है। वही दुसरी ओर एक नवीन आयाम के रुप में भी देखा जा सकता है। कोविड –19 एक महामारी था जो पूरे विश्व मे अपना कहर दिखाया था। इस महामारी ने शिक्षा पर ही नही अपितु निम्न क्षेत्र जैसे (सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, एवं धार्मिक) पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ा था। आज भी विश्व के किसी भी कोने मे कोविड–19 का नाम सुनते ही रुह कॉप उठता है महामारी ऐसी होती है हमारे युग में हमने कभी नही देखा बल्कि अपने दादा–परदादा से सुनने मे आया था कि महमारी किस तरह अपना कहर भरपाता है।

इसी तरह पूरे विश्व में और भी महामारी आई जो निम्न है हैजा, खसरा, पोलिया स्वाइन फ्लु जिसे विश्व स्वस्थ सगंठन द्वारा महामारी की घोषणा किया गया था। विश्व स्वस्थ संगठन द्वारा जारी एक रिर्पोट के अनुसार भारत में 47 लाख लोगों की जान गई। जब कि भारत सरकार द्वारा इस रिर्पाट को गलत ठहराया गया भारत मे कोरोना 19 की वजह से 5,23,975 बताया गया है इसी के हिसाब से पूरे विश्व मे लगभग ड़ेढ करोड़ लोगों की जान गया।

शुरुवात –

कोविड–19 महमारी कि शुरुवात दिसम्बर 2019 मे चीन के बुहान प्रान्त में कोविड–19 का पहला केश सामने आया जिसे चीनी सरकार द्वारा इस बीमारी की पुष्टि एव दिशा निर्देश किसी भी देष के साथ सांझा करना जरुरी नही समझा बल्कि चीनी सरकार द्वारा अपने ताकत के जोर से मीडिया को भी दाबा दिया।

लेकिन यह महमारी ज्यादा देर तक सीमित नही रहा और 2020 के शुरुवाती दौर पर पूरे विश्व को अपने शिकंजे मे ले लिया। पूरा विश्व अपनी अर्थव्यवस्था या अपना शाख बचाने मे लगे रहे और महमारी ने अपना काम शुरु कर दिया। वैज्ञानिकों द्वारा शुरुवात में इस महामारी कि उत्तपति चमगादड़ के मांस का खाने के बाद बताया गया पुनः ही इसे चीन के वैज्ञानिकों द्वारा किसी प्रयोगशाला मे तैयार किया रासयनिक हथियार भी कहा गया किन्तु अभी तक यह महामारी किस तरह ओर कैसे आया किसी के पास कोई जवाब नही है। यह महामारी एक सक्रांमक महामारी है। किसी सक्रांमक व्यक्ति के सम्पर्क मे आने से फैलता है।

लक्षण–

इसके लक्षण स्वाइन फ्लु की तरह है कोविड 19 के लक्षण इस प्रकार के थे जैसे बुखार आना, सर्दी, खांसी, थकान महसूस होना, सिरदर्द करना, ठंड महसुस होना,सांस मे तकलीफ, नाक बहना, और गले मे खरास होना सांस लेने मे कठिनाई आना और यह एक प्रकार का संक्रमित बीमारी है जो एक व्यक्ति से दुसरे व्यक्ति मे संक्रमण हो जाता है।

विश्व स्वस्थ संगठन द्वारा कोविड–19 को महामारी की घोषणा–

महामारी ने दुनिया भर में गंभीर सामाजिक और आर्थिक व्यावधान पैदा किया जिससे महामंदी के बाद सबसे बड़ी वैश्विक मंदी भी शामिल थी।

वही भारतीय अर्थव्यवस्था पूर्ण रूप से चरमरा गई। विश्व के इस भयवाहक तबाही को देखकर विश्व स्वस्थ संगठन द्वारा जनवरी–फरवरी 2020 मे कोरोना 19 को महामारी घोषित किया और इस महामारी को निपटने के लिए दिशा निर्देश जारी किया गया।

जिस वजह से पूरे विश्व की आवा–जाही पर प्रतिबंध लग गया इसके उपरान्त भारत के सरकारी कम्पनी या प्राइवेट सेक्टर पूर्ण रूप से बंद कर दिये या वर्क फॉर होम कर दिये कई न्यायलय, दफतर, शैक्षणिक संस्थानों, विद्यालय, विश्वविद्यालय, दुकानों मॉलों सभी को बंद करने के आदेश जारी कर दिया गया 2020 एवं 2021 के जितने भी कार्यक्रम थे उन्हें रद्द कर दिया गया।

नकरात्मक प्रभाव

1. स्कूलों का बंद होना–

कोविड 19 के दौर में देष के बढ़ते संक्रमण को देखते हुए भारत सरकार द्वारा भारत के सभी स्कूलों चाहे शासकीय हो या प्राइवेट हो सभी षिक्षण संस्थानों को बंद करने के आदेश जारी किया गयाभारत मे 41 सप्ताह लगभग 10 महीना 3 तक स्कूल बंद थे जिस कारण बच्चों के शिक्षा पर गहरा प्रभाव पड़ा।

2. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की कमी–

कोविड 19 के दौरन पढ़ाई को सुचारू रूप से संचालन करने के लिए सरकार द्वारा ऑनलाइन पद्धति का इस्तेमाल मे लाया गया जो पूर्ण रूप से निरर्थक साबित हुआ। उसकी गुणवत्ता बेहद खराब थी। जैसे किसी पालक के पास स्मार्टमोबाईल न होना मोबाईल है भी तो नेटवर्क का न होना और इन्टनेट की समस्या की सामना करना सारी सुविधा होने पर आवाज का स्पष्ट न होना एक प्रकार पूर्णरूप से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की कमी कह सकते है।

परीक्षा प्रणाली पर प्रभाव– कोविड 19 के दौर मे ली गई आनॅलाईन परीक्षाओं को वास्ताविक परीक्षा नही कहा जा सकता। इस परीक्षा से बच्चों को वह अनुभव नही मिल पाया जो सामान्य परीक्षा से प्राप्त होते है। इस परीक्षा में घर से ही परीक्षा लिखना था बच्चों को सही समय मे प्रश्न प्राप्त हो जाते थे और बच्चे नोट्स देखकर पुस्तक देखकर, या किसी प्रश्न बैंक देखकर प्रश्नों का उत्तर लिख लेते थे। इस परीक्षा को परीक्षा न कहकर खुली परीक्षा कहे तो बेहतर होगा।

परीक्षा परिणाम की विश्वासनीयता पर अविश्वास– कोविड 19 के दौर मे बच्चों के परीक्षा परिणाम मे अविश्वानीय अंक प्राप्त हुए है जिसको देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि उनके काबिलियत से अधिक अंक मिला है। ऐसे मे हम कह सकते है कि यह परीक्षा परिणाम अविश्वास है।

बच्चों का अधूरा ज्ञान– कोविड 19 के समय जो बच्चों द्वारा ऑनलाइन के माध्यम से जो पाठयक्रम को पढ़ाया गया था। उस कक्षा के पाठयक्रम पूरी तरह से कमजोर हो गए है। जिस कारण बच्चों को उच्च कक्षा के पाठयक्रम को पढ़ने में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है।

विश्वविद्यालयीन शिक्षा पर प्रभाव– उच्च शिक्षा के पाठयक्रम या विश्वविद्यालय परीक्षा भी ऑनलाइन परीक्षा के माध्यम से ही संभव था। जो घर बैठे परीक्षा देना था तथा कक्षाओं को भी को भी ऑनलाइन पढ़ाना उचित नही कहा जा सकता।

पाठयक्रम देर से शुरू होना– कोविड 19 के समय जो भारतीय शिक्षा व्यवस्था चरमरा गई थी प्रवेश भी सही समय मे नही हो पाया था पाठयक्रम की बात करे तो इन्हे भी देर से शुरू किया गया। यहॉ तक कि सभी प्रदेश में प्रतियोगी परीक्षा पर प्रभाव पडा था अतः कोई भी प्रतियोगिता परीक्षा का समय सारणी मे बदलाव किया गया था जैसे जुलाई के स्थान पर दिसम्बर तक में शुरू हो पाया इससे बच्चों को भारी नुकसान हुआ।

कुछ इलाकों के लिए शिक्षा का पूरी तरह बन्द होना –

कुछ ऐसे क्षेत्र भी है जहॉ सामान्य रूप से इन्टरनेट या मोबाईल का नेटवर्क भी काम नही करता, इन क्षेत्रों में मानो शिक्षा पूरी तरह ठपप हो गई थी केवल नाममात्र के लिए कहा जा सकता था कि शिक्षा दी जा रही है।

शिक्षकों को परेशानी– कोविड 19 के दौर मे षिक्षको को पूर्ण रूप से परेषानी का सामना करना पड़ा विशेष रूप उन शिक्षकों जो कम्प्युटर का ज्ञान प्रशिक्षण प्राप्त नही कर पाए थे। उन्हे ऑनलाइन शिक्षा के लिए प्रांरभ में दिक्कत का सामना करना पड़ा। एवम इसमे ऐसे शिक्षक भी थे जिन्हे जिले के सीमा क्षेत्र में भी ड्युटी के लिऐ भेजा जा रहा था।

पालकों का भय – सामान्य पालकों का भय कोविड 19 के वक्त ये डर बना रहता था कि कही बच्चे कोरोना से संक्रमित हो न जाए। क्योंकि बड़े व्यक्ति बीमारी के समय मे अपने को संभाल सकते थे।

बच्चे लोग संक्रमित हो जाए तो क्या होगा इसका डर पालकों को कोरोना काल मे हमेशा सता रहा होगा। इस लिए जब शुरूवाती दौर मे स्कुल को खोला गया तो बच्चों कि उपस्थिति भी सामान्य से बहुत कम होती थी।

बच्चों का शिक्षा के प्रति गैर जिम्मेदारी पूर्ण व्यवहार– कोविड 19 के उस दौर में आनॅलाइन परीक्षा से परीक्षा का भय समाप्त हो गया जिस कारण बहुत से बच्चों का पढ़ाई से रूचि कम हो गया।

जिस कारण कई बच्चे तो पढ़ना छोड़ दिया था 2018 में 1.5 प्रतिशत बच्चे ने बीच रास्ते मे अपना पढ़ाई छोड़े कोरोना काल मे 5.3 प्रतिषत बच्चों ने शाला त्याग दिया।

नई शिक्षा नीति 2020 पर प्रभाव– भारत द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 जिसे भारत के संपूर्ण मे संचालित करना था जिसे जून–जुलाई 2021 में लागु करना था हालाकि उस समय पूरे विश्व मे कोरोना महामारी फैला हुआ था इस कारण 2021 मे इस शिक्षा नीति की शुरूवात नही किया गया।

सकारात्मक पक्ष–

ऑनलाइन पढ़ाई का उदय – कोविड 19 के दौर ऑनलाइन पढ़ाई का विकास तेजी से बढ़ा जिसके तहत दुरस्थ शिक्षा के लिए एक वरदान साबित हुआ आज बहुत सारी विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न प्रकार के विषयों का संचालन किया जा रहा है। जो शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व तकनीकि से कम नही है।

इन्टरनेट का प्रसार – कोविड 19 के समय में शिक्षा के लिए विभिन्न एप का उपयोग किया गया जिस कारण आम नागरिक तक स्मार्टफोन की आवश्यकता हुई इस कारण कोविड 19 के समय इन्टरनेट का व्यापक प्रचार प्रसार हुआ।

मेडिकल शिक्षा के मॉग में वृद्धि – कोरोना काल में डॉक्टरों की कमी का अनुभव हुआ। कई अस्पातलों में डॉक्टरों द्वारा दिन रात अपने काम में लगे रहे अपने पेशे और अपने को एक भारतीय होने के गर्व से अपना योगदान हर समय दिया इस भयवहाक के घडी मे अपने कर्तव्य का पालन किया जिससे लोगों के प्रति डॉक्टर के प्रति विश्वास किया जिस समय यह पता चला कि भारत दश में डॉक्टर के कमी को देखा गया। इस प्रकार डॉक्टरों की संख्या में वृद्धि कि भावना आयी। मेडिकल शिक्षा कि मॉग बढ़ाने लगी।

मेडिकल कॉलेज की सीटों मे वृद्धि– कोविड 19 के दौरान डॉक्टरों की कमी को भारत सरकारद्वारा महसुस किया गया था इा कारण सरकार द्वारा मेडिकल कॉलेज की सीटों मे वृद्धि किया गया।

नर्सिग व फार्मेसी कॉलेजों कि मांग मे विस्तार– कोविड के दौरान में नर्सिंग एवं फार्मेसी व्यवसाय का भी अपना महत्व रहा एवं बढ़ते मांगों को देखते हुय सरकार एवं निजी व्यवसाय द्वारा इस पाठयक्रम का विकास तेजी से बढा है।

शिक्षक के सम्मान मे वृद्धि– कोविड़ के समय में शिक्षकों को शिक्षा के कार्य के अतिरिक्त अन्य कार्य जैसे जिले के सीमा मे पहरेदारी करना, लोगों के स्वस्थ संबधी कार्य में सहायता देना, नुक्कड नाटक द्वारा कोरोना के विषय मे जागरूकता लाना, हमेशा मास्क पहनने का सलाह देना, सेनेटाइजर का उपयोग करना आदि कार्यो का करना एक अपने आप मे सम्मान की बात है।

अतः शिक्षकों के सम्मान में वृद्धि हुई लोगों मे उनके प्रति सम्मान की भावना पैदा हुआ। इस प्रकार हमने देखा कि किस प्रकार कोरोना महामारी का शिक्षा के क्षेत्र में नकारात्मक प्रभाव एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

कोविड के पश्चात हुए नवीन परिवर्तन या आयाम इस प्रकार है –

कोविड के दौरान मे हुई घटनाओं का व्यापक प्रभाव समाज पर पड़ा। समाज की सोच, विचार तथा रहन सहन आदि बदले बदले से लग रहे है। जिन्हें इन बिन्दुओं से समझा जा सकता है।

गुलामी की मानसिकता का अन्त–

कोविड 19 के दौर के पहले तक लोगों में गुलामी की मानसिकता भरी हुई थी लोग दुसरे देशों खासकर युरोप तथा अमेरिका को भारत से श्रेष्ठ मानते थे परन्तु कोविड के दौरान भारत ने जिस प्रकार संसार का मदद की लोगों में गुलामी की मानसिकता का अन्त हुआ। लोग भारत पर गर्व करने लगे।

भारत में डिजिटल युग–

कोरोना महामारी के दौरान सभी कार्य यहॉ तक पढाई लिखाई भी डिजिटल माध्यम से हो रही थी। इस कारण डिजिटल उपकरण या साधन के प्रति लोगों का रूझान बढ़ा तथा लोग मोबाईल तथा इन्टरनेट का प्रयोग करने लगे। कोविड के पहले इन उपकरणों का प्रयोग काफी कम था मोबाईल तो था लेकिन इसमें काम न के बराबार था।

भारत की शिक्षा व्यवस्था में आमूल परिवर्तन –

कोविड के पहले ऑनलाइन शिक्षा तथा दुरस्थ शिक्षा का अस्तित्व तो था परंतु आज के दौर जितना नही था कोविड़ के समय ऑनलाइन शिक्षा दुरस्थ शिक्षा का व्यापक प्रयोग हुआ।

इस कारण आज शिक्षा संस्थानों तथा कोचिंग सेन्टर आदि ने व्यापक रूप से ऑनलाइन शिक्षा का प्रयोग करना शुरू कर दिया है।

नवीन एप एवं सॉफटवेयर का निर्माण–

कोरोना महामारी कारण भारत सरकार द्वारा सभी पाठ्यक्रम का एक एप तैयार किया गया। और नवीन प्रकार के सॉफटवेयर का उपयोग किया जा रहा जिसमे छात्र–छात्राओं विषय पर रूचि लिया जा रहा है।

भारत का विश्व नेता के रूप में उभरना–

कोविड के दौर मे भारत ने लगभग 150 देषों से भी अधिक देशों की मदद की। किसी को दवा, किसी को उपकरण, किसी को अनाज आदि यहॉ तक की सुपरपावर अमेरिका एवं रूस जैसे बड़े देशों को भी भारत से मदद मांगनी पड़ी इस कारण विश्व मे भारत के प्रति मान सम्मान में वृद्धि हुई। भारत विश्व के महान देशों गिना जाने लगा तथा एक विश्व नेता बनकर भारत उभर कर सामने आ रहा है।

इस महामरी के कारण भारत के वातावरण मे बहुत परिवर्तन देखने को मिला। जो एक समय कार्बन डाई आक्साईड मात्रा मे वृद्धि देखने को मिल रहा था इसका मूख्य कारण था आवा जाही कम होना सभी कम्पनी को बंद कर दिया गया था यहां तक भारत की जीवनदायनी कहे जाने वाले रेलवे के भी पहिये थम गये थे। नदियों का जल साफ हो गया था कही जगह शोर शराबा नजर नही आ रह था। वातावरण शांत था जिस कारण पर्यावरण में शुद्ध हो गया था।

इस प्रकार हमने देखा कि यद्यपि कोरोना विश्व के लिए एक काला दौर था जिसने बड़े पैमाने पर लोगों के जान लिए, पर यह भी सत्य है कि इसने भारत दुरगामी प्रभाव छोड़े। भारत सदियों पहले विश्व गुरू कहलाता था। लम्बे समय से विदेषी सत्ता ने भारतीयों को मानसिक गुलामी में धकेल दिया था। परन्तु कोरोना काल ने भारतीयों को पुनः बल दिया कि हम भी किसी से कम नही है। भारत मानसिक गुलामी से उठ चुका है है जिसका उदाहरण चन्द्रयान 3 के रूप में दिखाई दिया। अब भारत पुनः विश्व नायक बनने की दिशा में अग्रसर है।